दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

बन्दों के हुक़ूक़

(Hindi)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

वल्लाह ! वोह सुनते हैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है, जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त दी है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो वोह मुझे इस का और इस के बाप का नाम पेश करता है, कहता है **:** ''फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है।''

(مسند بزار ج۴ ص۲۵۴ حدیث۱۴۲۵)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ''**ज़ियाए दुरूदो सलाम**'' सफ़ह़ा नम्बर 8 पर येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं **:** سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तावर है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश किया जाता है। यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर पर ह़ाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा क़ुव्वते समाअ़त दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसलमानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है। जब ख़ादिमे दरबार की क़ुव्वते समाअ़त (या'नी

www.dawateislami.net

सुनने की ताक़त) का येह हाल है तो सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने गुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रयाद सुन कर بِاِذْنِ الله (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इजाज़त से) इन की इमदादें फ़रमाएंगे ! (ज़ियाए दुरूदो सलाम, स. 8)

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद
मैं कुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा
मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसुलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِى ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये खूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द खुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَ لَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुक़ूक़ दो त़रह़ के होते हैं, एक हुक़ूक़ुल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़) और दूसरा हुक़ूक़ुल इबाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) । हुक़ूक़ुल्लाह तो हम पर इस वज्ह से लाज़िम हैं कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं, उस ने हमें पैदा फ़रमाया, वोही हमारा ख़ालिक़ो मालिक और पालने वाला है, इसी वज्ह से उस के अह़कामात की बजा आवरी हम पर लाज़िम है । लेकिन बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी हम पर क्यूं ज़रूरी है ? इस बात का जवाब देते हुवे हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : इन्सान या तो अकेला रहता है या किसी के साथ और चूंकि इन्सान का अपने हम जिन्स लोगों के साथ मेल जोल रखे बिग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल है, लिहाज़ा उस पर मिल जुल कर रहने के आदाब सीखना ज़रूरी हैं । चुनान्चे, हर इख़्तिलात़ (या'नी मेल जोल) रखने वाले (शख़्स) के लिये मिल जुल कर रहने के कुछ आदाब (हुक़ूक़) हैं । (इह़याउल उ़लूम, 2 / 699)

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा बन्दों के हुक़ूक़ के लाज़िम होने का बुन्यादी सबब तमाम इन्सानों का मिल जुल कर एक साथ रहना है । आज के बयान में हम اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बन्दों के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे । आइये ! अव्वलन बन्दों के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ एक इब्रत आमोज़ ह़िकायत सुनते हैं । चुनान्चे,

गेहूं का एक दाना

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"ज़ुल्म का अन्जाम"** सफ़ह़ा नम्बर 13 पर येह रिवायत नक़्ल करते हैं : एक शख़्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, लेकिन ह़िसाबो किताब हुवा, यहां तक कि उस दिन के बारे में भी मुझ से पूछ गछ हुई, जिस रोज़ मैं रोज़े से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था, जब इफ़्त़ार का वक़्त हुवा तो मैं ने गेहूं की एक बोरी में से गेहूं का एक दाना उठा लिया और उस को तोड़ कर खाना ही चाहता था कि एक दम मुझे एह़सास हुवा कि येह दाना मेरा नहीं । चुनान्चे, मैं ने उसे जहां से उठाया था, फ़ौरन उसी जगह डाल दिया और (मुझ से) उस का भी ह़िसाब लिया गया, यहां तक कि उस पराए गेहूं के तोड़े जाने के नुक़्सान के ब क़दर मेरी नेकियां मुझ से ली गईं ।

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج٨ ص٨١١، تحت الحديث ٥٠٨٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! कि जब पराए गेहूं के एक मा'मूली से दाने को बिला इजाज़त तोड़ने का इस क़दर नुक़्सान है कि मरने के बा'द उस शख़्स को नेकियां देनी पड़ गईं, तो एक मुसलमान के बुन्यादी हुक़ूक़ को पामाल कर डालना और उन की कुछ परवा न करना किस क़दर नुक़्सान और ख़सारे का सबब बन सकता है । अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! कि हमारे मुआ़शरे में एक दूसरे के हुक़ूक़ को बुरी त़रह़ पामाल किया जाता है ।

तीन पैसों के इवज़ 700 बा जमाअ़त नमाज़ें !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुआ़शरे की इस ह़ालते ज़ार पर कुढ़न का इज़्हार करते हुवे फ़रमाते हैं : अब सिर्फ़ गेहूं का दाना तोड़ने या खा जाने ही की कहां बात है ! आज कल तो कई लोग बिग़ैर दा'वत के दूसरों के यहां (पेट भर कर) खाना ही खा डालते हैं ! ह़ालांकि बिग़ैर बुलाए किसी की दा'वत में घुस जाना शरअ़न मन्अ़ है । अबू दाऊद शरीफ़ की ह़दीसे पाक में येह भी है : "जो बिग़ैर बुलाए गया, वोह चोर हो कर घुसा और ग़ारत गरी कर के निकला ।" (سُنَنُ اَبِی داوٗد ج۳ص۴۷۹حدیث۳۷۴۱)

नीज़ आज कल क़र्ज़ के नाम पर लोगों के हज़ारों बल्कि लाखों रुपये हड़प कर लिये जाते हैं । अभी तो येह सब आसान लग रहा होगा, लेकिन क़ियामत में बहुत महंगा पड़ जाएगा । ऐ लोगों का क़र्ज़ दबा लेने वालो ! कान खोल कर सुनो ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं : "जो दुन्या में किसी के तक़रीबन तीन पैसे दैन (या'नी क़र्ज़) दबा लेगा, बरोज़े क़ियामत इस के बदले सात सौ बा जमाअ़त नमाज़ें देनी पड़ जाएंगी ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 25, स. 69) जी हां ! जो किसी का क़र्ज़ दबा ले, वोह ज़ालिम है और सख़्त नुक़्सान व ख़ुसरान में है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान त़बरानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मज्मूअ़ए ह़दीस "**त़बरानी**" में नक़्ल करते हैं : "सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस का मफ़्हूम है : ज़ालिम की नेकियां मज़्लूम को, मज़्लूम के गुनाह ज़ालिम को दिलवाए जाएंगे ।"

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر ج۴ص۱۴۸حدیث۳۹۶۹)

गुनाहों के ख़ुले दफ़्तर खड़ा हूं आह ! मीज़ां पर
नहीं हैं नेकियां अब क्या करूंगा या रसूलल्लाह
*करम फ़रमा कि हो **अ़त्तार** भी इस क़ौल का मिस्दाक़*
"तेरी ख़ातिर जियूंगा और मरूंगा" या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 323, 325)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हमा वक़्त जारी गुनाहों का मीटर !

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ''**कीमियाए सआदत**'' में नक़्ल करते हैं : ''जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी तरह अदा करूंगा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हिफ़ाज़त के लिये चन्द फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ करते हैं कि इस का क़र्ज़ अदा हो जाए ।'' (اِتحافُ السّادۃ للزّبیدی ج ٦ ص ٤٠٩) और अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़ ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा । ख़्वाह रोज़े की हालत में हो या सो रहा हो, उस के ज़िम्मे गुनाह लिखा जाता रहेगा । (गोया हर हाल में गुनाह का मीटर चलता रहेगा) और हर सूरत में उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत पड़ती रहेगी । येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की हालत में भी उस के साथ रहता है । अगर (मक़रूज़) अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है, तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनहगार है । अगर क़र्ज़ के बदले ऐसी चीज़ दे, जो क़र्ज़ ख़्वाह को ना पसन्द हो, तब भी देने वाला गुनहगार होगा और जब तक उसे राज़ी नहीं करेगा, इस ज़ुल्म के जुर्म से नजात नहीं पाएगा, क्यूंकि उस का येह फे़'ल कबीरा गुनाहों में से है, मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं ।

(कीमियाए सआदत, जि. 1, स. 336, अज़ ज़ुल्म का अन्जाम, स. 14)

मज़्लूम और दुख्यारे फ़ाइदे में !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दों की हक़ तलफ़ी आख़िरत के लिये बहुत ज़ियादा नुक़्सान देह है । हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मुहम्मद बिन अ़ली मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ''**क़ूतुल क़ुलूब**'' में फ़रमाते हैं : ''ज़ियादा तर (अपने नहीं बल्कि) दूसरों के गुनाह ही दोज़ख़ में दाख़िले का बाइस होंगे जो (हुक़ूक़ुल इबाद तलफ़ करने के सबब) इन्सान पर डाल दिये जाएंगे । नीज़ बे शुमार अफ़राद (अपनी नेकियों के सबब नहीं बल्कि) दूसरों की नेकियां हासिल कर के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।'' (क़ूतुल क़ुलूब, जि. 2, स. 253)

www.dawateislami.net

ज़ाहिर है, दूसरों की नेकियां ह़ासिल करने वाले वोही होंगे, जिन की दुन्या में दिल आज़ारियां और ह़क़ तलफ़ियां हुई होंगी, यूं बरोज़े क़ियामत मज़्लूम और दुख्यारे लोग फ़ाइदे में रहेंगे। (जुल्म का अन्जाम, स. 17, 18, मुल्तक़त़न)

हुक़ूक़ुल इ़बाद आह ! होगा मेरा क्या ! करम मुझ पे कर दे करम या इलाही !
बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की रहे आह ! नाकाम हम या इलाही !
मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे पए ताजदारे ह़रम या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 110)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बन्दों के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दों के हुक़ूक़ का मुआ़मला वाक़ेई बहुत नाज़ुक है, हमें इस बारे में हर वक़्त मोह़तात़ रहना चाहिये। अगर कभी दानिस्ता या ना दानिस्ता त़ौर पर किसी मुसलमान का ह़क़ तलफ़ हो जाए तो फ़ौरन तौबा करते हुवे साह़िबे ह़क़ से मुआ़फ़ी भी मांगनी चाहिये। हुक़ूक़ुल्लाह सच्ची तौबा से मुआ़फ़ हो जाते हैं, जब कि बन्दों के हुक़ूक़ में तौबा के साथ साथ जिस का ह़क़ मारा है, उस से भी मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : ह़क़ किसी क़िस्म का भी हो, जब तक साह़िबे ह़क़ मुआ़फ़ न करे, मुआ़फ़ नहीं होता, हुक़ूक़ुल्लाह में तो ज़ाहिर (है) कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा दूसरा मुआ़फ़ करने वाला कौन हो सकता है ? कि (क़ुरआने पाक में है) وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللهُ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के) और बन्दों के हुक़ूक़ में रब तआ़ला ने येही ज़ाबित़ा मुक़र्रर फ़रमा रखा है कि जब तक वोह बन्दा मुआ़फ़ न करे, मुआ़फ़ न होगा। अगर्चे मौला तआ़ला हमारा और हमारे जानो माल व हुक़ूक़ सब का मालिक है, अगर वोह बे हमारी मरज़ी के, हमारे हुक़ूक़ जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा दे, तो भी ऐ़न ह़क़ और अ़द्ल है कि हम भी उसी के और हमारे हुक़ूक़ भी उसी के मुक़र्रर फ़रमाए हुवे हैं, अगर वोह हमारे ख़ून, माल और

www.dawateislami.net

इ़ज़्ज़त वग़ैरहा को मा'सूम व मोह़तरम न करता तो हमें कोई कैसा ही आज़ार (या'नी तक्लीफ़) पहुंचाता, कभी हमारे ह़क़ में गिरिफ़्तार न होता। यूंही अब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे, हमारे हुक़ूक़ मुआ़फ़ फ़रमा दे क्यूंकि वोही मालिके ह़क़ीक़ी है, मगर उस करीम, रह़ीम عَزَّوَجَلَّ की रह़मत (है) कि हमारे हुक़ूक़ का इख़्तियार हमारे हाथ (में) रखा है, बे हमारे बख़्शे मुआ़फ़ हो जाने की शक्ल न रखी, ताकि कोई मज़्लूम येह न कहे कि ऐ मेरे मालिक ! मुझे मेरा ह़क़ न मिला। (फ़तावा रज़विय्या, 24 / 460, बित्तग़य्युर क़लील)

हुक़ूक़ दबाने वालों के लिये जहन्नम है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दों के हुक़ूक़ अदा करना निहायत ज़रूरी हैं, इस में ग़फ़्लत बरतना दीनो दुन्या के नुक़्सान का बाइ़स है। हमारे प्यारे दीन ने बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी पर बहुत ताकीद की है। बादशाह हो या वज़ीर, अमीर हो या फ़क़ीर, मालिक हो या ग़ुलाम, हुक़ूक़ की अदाएगी के लिये सब को एक ही सफ़ में खड़ा कर दिया और जब किसी मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का ह़क़ साबित हो जाए, तो उस ह़क़ को अदा करने का हुक्म भी इरशाद फ़रमाया है। मगर अफ़्सोस ! आज कल ग़फ़्लत का दौर दौरा है, जिस त़रह़ मुसलमानों की एक ता'दाद हुक़ूक़ुल्लाह से ग़ाफ़िल होती नज़र आ रही है, इसी त़रह़ मुआ़शरे में बन्दों के हुक़ूक़ को पामाल करना भी बहुत आ़म होता जा रहा है। मुसलमान अपने अन्जाम से बे ख़ौफ़ हो कर ज़ुल्म व ज़ियादती करने, मोबाइल छीनने, धमकियां दे कर लोगों से रक़म का मुत़ालबा करने और उन के माल व जाइदाद पर क़ब्ज़ा करने, क़र्ज़ दबा लेने, चोरी, डकेती, क़त्लो ग़ारत गरी जैसे गुनाहों में मुब्तला हो कर दूसरे मुसलमानों के हुक़ूक़ पामाल कर रहे हैं। ह़ालांकि मुसलमान का ह़क़ दबाना, उसे किसी भी त़रह़ से सताना, उस का दिल दुखाना, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। बिला वज्ह मुसलमानों को सताने के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

اِنَّ الَّذِیۡنَ فَتَنُوا الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَ الۡمُؤۡمِنٰتِ ثُمَّ لَمۡ یَتُوۡبُوۡا فَلَهُمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ لَهُمۡ عَذَابُ الۡحَرِیۡقِ ؕ﴿۱۰﴾ (پ۳۰، البروج: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक जिन्हों ने ईज़ा दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिये आग का अ़ज़ाब ।*

हुक़ूक़ पामाल करना ज़ुल्म भी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों के हुक़ूक़ की पासदारी न करने, उन्हें ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाने और बिला वज्ह सताने वालों को अ़ज़ाबे नार की वईद सुनाई है, इस लिये ख़ूब ख़ूब मोह़तात़ रहिये और मुसलमानों को बिला वज्ह डराने, धमकाने और उन का ह़क़ दबाने से हमेशा बाज़ रहिये । किसी से ना इन्साफ़ी करना, अकेला या भरे मज्मअ़ में ज़लील करना, बे इ़ज़्ज़ती करना, गालियां देना, मारना, पीटना और हर वोह काम करना जिस से दूसरे के हुक़ूक़ पामाल हों, ह़क़ीक़तन येह भी ज़ुल्म है ।

ह़ज़रते सय्यिद शरीफ़ जुर्जानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : किसी चीज़ को उस के इ़लावा कहीं और रख देना ज़ुल्म है । (التعریفات للجرجانی، ص۱۰۲) जब कि शरीअ़त में ज़ुल्म से मुराद येह है कि किसी का ह़क़ मारना, किसी को ग़ैर मह़ल में ख़र्च करना, किसी को बिग़ैर क़ुसूर के सज़ा देना ।

(मिरआत, 6 / 669)

याद रखिये ! ज़ुल्म का अन्जाम बहुत ही भयानक और ख़त़रनाक है, ज़ालिम शख़्स आख़िरत में तो अ़ज़ाब का शिकार होता ही है, लेकिन बा'ज़ अवक़ात ऐसा शख़्स दुन्या में भी सख़्त ह़ालात से दो चार होता है ।

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम को मोहलत देता है, यहां तक कि जब उस को अपनी पकड़ में लेता है तो फिर उस को नहीं छोड़ता । येह फ़रमा कर सरकारे नामदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 12 सूरए हूद की आयत नम्बर 102 तिलावत फ़रमाई :

www.dawateislami.net

وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर, बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं (सख़्त) है ।*

(صحیح بخاری، ۳/۲۴۷، حدیث:۴۶۸۶)

बन्दों के हुक़ूक़ और फ़रामीने मुस्त़फ़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहादीसे मुबारका में कई मक़ामात पर बन्दों के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत बयान की गई है । आइये ! इन में से चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनने की सआदत हासिल करते हैं ।

1. मुसलमान की सब चीजें मुसलमान पर ह़राम हैं, उस का माल और उस की आबरू और उस का ख़ून । आदमी को बुराई से इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को ह़क़ीर जाने ।
(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 101 / ابو داود، ۴/۳۵۴، حدیث:۴۸۸۲)
2. जिस के ज़िम्मे अपने भाई का आबरू वग़ैरा किसी बात का ज़ुल्म हो, उसे लाज़िम है कि क़ियामत का दिन आने से पहले यहीं दुन्या में उस से मुआफ़ी मांग ले, क्यूंकि वहां न दीनार होंगे और न दिरहम, अगर इस के पास कुछ नेकियां होंगी, तो ब क़दर उस के ह़क़ के, इस से ले कर उसे दी जाएंगी, वरना उस (मज़्लूम) के गुनाह इस (ज़ालिम) पर रखे जाएंगे । (अज़ ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 294, / بخاری، ۲/۱۲۸، حدیث:۲۴۴۸)
3. दफ़्तर (रजिस्टर) तीन हैं, एक दफ़्तर में **अल्लाह** तआला कुछ न बख़्शेगा और एक दफ़्तर की **अल्लाह** तआला को कुछ परवा नहीं और एक दफ़्तर में **अल्लाह** तआला कुछ न छोड़ेगा, वोह दफ़्तर जिस में अस्लन (या'नी बिल्कुल) मुआफ़ी की जगह नहीं, वोह तो कुफ़्र है कि किसी त़रह़ न बख़्शा जाएगा और वोह दफ़्तर जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कुछ परवा नहीं, वोह बन्दे का गुनाह है, ख़ालिस अपने और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के मुआमले में (कि किसी दिन का रोज़ा तर्क किया या कोई नमाज़ छोड़ दी, **अल्लाह** तआला चाहे तो उसे

www.dawateislami.net

मुआ़फ़ कर दे और दर गुज़र फ़रमाए) और वोह दफ़्तर जिस में से **अल्लाह** तआ़ला कुछ न छोड़ेगा वोह बन्दों का आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म है कि इस में ज़रूर बदला होना है।

(अज़ फ़तावा रज़विय्या, 24 / 460 /مستدرک، ۵/۷۹۴،حدیث:۸۷۵۷)

4. ''तुम लोग हुक़ूक़, ह़क़ वालों के सुपुर्द कर दोगे, ह़त्ता कि बे सींग वाली का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाएगा।''

(صَحِیح مُسلِم ص ۱۳۹۴حدیث:۲۵۸۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हम ने चार अह़ादीसे मुबारका सुनीं, इन में बयान कर्दा आख़िरी ह़दीसे मुबारका का मत़लब येह है कि अगर तुम ने दुन्या में लोगों के हुक़ूक़ अदा न किये तो ला मह़ालह (या'नी हर सूरत में) क़ियामत में अदा करोगे, यहां दुन्या में माल से और आख़िरत में आ'माल से, लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि दुन्या ही में अदा कर दो, वरना पछताना पड़ेगा। ''**मिरआत शर्ह़े मिश्कात**'' में है : ''जानवर अगर्चे शरई अह़काम के मुकल्लफ़ नहीं हैं, मगर हुक़ूक़ुल इ़बाद जानवरों को भी अदा करने होंगे।''

(मिरआत, जि. 6, स. 674, मुल्तक़त़न, अज़ ज़ुल्म का अन्जाम, स. 9)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें — बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब !
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम — करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 76, 77)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह वालों का ख़ौफ़े ख़ुदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाले उस के नेक बन्दे, बन्दों के हुक़ूक़ के ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाले मुआ़मलात में भी ऐसी एह़तियात़ करते हैं कि ह़ैरत में डाल देते हैं। मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को सफ़र पर रवाना होते वक़्त किसी ने दूसरे को पहुंचाने के लिये ख़त़ पेश किया, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ऊंट किराए पर लिया है, सुवारी वाले से इजाज़त लेनी होगी, क्यूंकि मैं ने उस को सारा सामान दिखा दिया है और येह ख़त़ ज़ाइद शै है। (माख़ूज़ इह़याउल उ़लूम, 1 / 353)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ह़क़्क़ुल अ़ब्द की अदाएगी का जज़्बा सद करोड़ मरह़बा ! कि ऊंट वाले को सारा सामान दिखाने के बा'द मा'मूली से काग़ज़ का वज़्न रखने के लिये भी ऊंट वाले से इजाज़त लेने का ज़ेह्न रखते हैं ताकि उस की ह़क़ तलफ़ी न हो जाए।

नेकियों के नाम पर गुनाह मत कमाएं !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ साउंड सिस्टम पर बुलन्द आवाज़ से इजतिमाए ज़िक्रो ना'त करने वालों को बन्दों के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ अहम मुआ़मलात पर तवज्जोह दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : बा'ज़ बच्चों की नींद कच्ची होती है, उन से मा'मूली सी आवाज़ भी बरदाश्त नहीं होती, फ़ौरन रोना शुरूअ़ कर देते हैं, जिस से घर वालों को सख़्त परेशानी का सामना होता है नीज़ घरों में ऐसे मरीज़ भी होते हैं जो बेचारे नींद की गोलियां खा कर बिस्तर पर पड़े रहते हैं। त़लबा को सुब्ह़ ता'लीम गाहों और दीगर अफ़राद को काम धंदों पर जाना होता है। ऐसे में अगर मह़ल्ले के अन्दर "साउंड सिस्टम" पर ज़ोरो शोर से मह़फ़िल जारी हो तो मजबूरों और मरीज़ों की सख़्त दिल आज़ारी का इम्कान रहता है। स्पीकर की कान फाड़ डालने वाली आवाज़ पर एह़तिजाज करने वालों के लिये ऐसी मिसाल देना क़त़अ़न मुनासिब नहीं है कि "शादियों में भी लोग फ़िल्मी गीत ज़ोरो शोर से चलाते हैं, उन को कोई क्यूं मन्अ़ नहीं करता ? हम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी करते हैं तो लोगों को तक्लीफ़ होने लगती है।" مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह खुला बोहतान है। कोई मुसलमान ख़्वाह कितना ही गुनाहगार क्यूं न हो, उस को हरगिज़ आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी से तक्लीफ़ नहीं हो सकती। शिकायत सिर्फ़ स्पीकर की आवाज़ से है। जिस मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हम ना'त ख़्वानी कर रहे हैं और उस में सिर्फ़ "**मज़ा**" लेने के लिये साउंड सिस्टम लगा रखा है, अगर इस वज्ह से पड़ोसी अज़िय्यत पा रहे हैं, तो यक़ीनन प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ख़ुश नहीं (होंगे)। दो चार मह़ल्लादारों से इजाज़त ले लेना क़त़अ़न ना काफ़ी है। दूध पीते

बच्चों, उन की माओं और दर्दे सर से तड़पते, बुख़ार में तपते और बिस्तरों पर बेचैनी से लोटते मरीज़ों से कौन इजाज़त लाएगा ? नीज़ येह भी ह़क़ीक़त है कि फ़िल्मी गानों के शोर से भी लोगों को परेशानी होती है मगर डर के मारे सब्र कर के पड़े रहते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बन्दों के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत समझने और उन को बजा लाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें, स. 18)

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अंजुमन आराई हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदाए मदीना कैसे लगाएं ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ भी बुज़ुर्गाने दीन की पैरवी करने वाली अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं । आप का पाकीज़ा किरदार, इस पुर फ़ितन दौर में हमारे लिये मश्अ़ले राह है, आप भी न सिर्फ़ ख़ुद बन्दों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ ख़ास एह़तियात़ फ़रमाते हैं, बल्कि अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को भी इस की तरग़ीब के मदनी फूलों से नवाज़ते रहते हैं । दा'वते इस्लामी की इस्ति़लाह़ में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये सदा लगा कर उठाना **''सदाए मदीना''** कहलाता है और येह ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम और मदनी इन्आ़म भी है ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ वक़्तन फ़-वक़्तन इस की तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं और इस से बन्दों के हुक़ूक़ तलफ़ हो जाने के डर से इस की एह़तियात़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : अज़ाने फ़ज्र के बा'द बिग़ैर मेगा फ़ोन, दो दो इस्लामी भाई सदाए मदीना लगाएं । मगर इस बात का ख़याल रखिये कि इतनी ज़ोरदार आवाज़ें न हों कि मरीज़ों, बच्चों और जो इस्लामी बहनें घर में नमाज़ में मश्ग़ूल हों या पढ़ कर दोबारा लेट गई हों, उन को

www.dawateislami.net

तश्वीश हो। दर्सो बयान करने, ना'त शरीफ़ पढ़ने और स्पीकर चलाने वग़ैरा में हमेशा नमाज़ियों, तिलावत करने वालों और सोने वालों की ईज़ा रसानी से बचना शरअ़न वाजिब है। कहीं ऐसा न हो कि हम ज़ाहिरी इ़बादत से ख़ुश हो रहे हों, मगर इस में दूसरों की परेशानी का बाइ़स बन कर ह़क़ीक़त में نَعُوْذُبِاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ गुनाहगार और दोज़ख़ के ह़क़दार बन रहे हों।

(हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें, स. 17)

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "सदाए मदीना"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हम ने बन्दों के हुक़ूक़ का ख़याल रखते हुवे सदाए मदीना लगाने के मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, हमें भी इन मदनी फूलों पर अ़मल करते हुवे इस मदनी काम या'नी "**सदाए मदीना लगाने**" की तरकीब करनी चाहिये और मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना चाहिये। फ़ी ज़माना मुसलमान दीन से बहुत दूर होते जा रहे हैं। एक ता'दाद ऐसी है कि जो दुन्यवी मुआ़मलात में इस क़दर मस्रूफ़ हो चुकी है कि उन्हें आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़िक्र तक नहीं, सुन्नतें और नवाफ़िल पढ़ना तो दूर, अक्सरिय्यत फ़र्ज़ नमाज़ें तक क़ज़ा कर देती है। इसी वज्ह से हमारी मसाजिद वीरान हो कर रह गई हैं। ऐसे में इन्हें दोबारा आबाद करने का अ़ज़्म करना और इसी अ़ज़्म की तक्मील के लिये जिद्दो जहद करना, यक़ीनन सआ़दत से कम नहीं है। इस लिये कोशिश कीजिये और मदनी इन्आ़म 35 पर अ़मल करते हुवे सदाए मदीना लगाइये और मसाजिद की आबाद कारी में दा'वते इस्लामी का साथ दीजिये। आइये ! सुनते हैं कि मदनी इन्आ़म नम्बर 35 क्या है :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस्लामी भाइयों के 72 मदनी इन्आ़मात में से मदनी इन्आ़म नम्बर 35 में इरशाद फ़रमाते हैं : "क्या आज आप ने **सदाए मदीना लगाई** ?" (दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसलमानों को जगाना सदाए मदीना लगाना कहलाता है)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हमारे अस्लाफ़ भी मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाया करते थे । मन्क़ूल है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मा'मूल था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को नमाज़ के लिये बेदार करते, जब नमाज़े फ़ज्र के लिये तशरीफ़ लाते, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते, नीज़ अज़ाने फ़ज्र के फ़ौरन बा'द अगर मस्जिद में कोई सोया होता, तो उसे भी जगाते । (طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۳/۲۶۳)

हमें भी चाहिये कि बिल ख़ुसूस नमाज़े फ़ज्र में सदाए मदीना लगाएं और दीगर नमाज़ों में भी अपने घर वालों, रिश्तेदारों और गली बाज़ारों में बैठे हुवे मुसलमानों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के नमाज़ के लिये मस्जिद में साथ लेते जाएं, हो सकता है कि हमारी इनफ़िरादी कोशिश से कोई पक्का नमाज़ी बन जाए और हमारे लिये सवाबे जारिया का ज़रीआ़ बन जाए । आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं ।

बे नमाज़ी, नमाज़ी बन गया

सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद, पंजाब, पाकिस्तान) के हजवेरी टाउन, मह़ल्ला बिलाल गंज में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं एक मॉडर्न, क्लीन शेव्ड, फ़िल्में ड्रामे देखना और गाने बाजे सुनना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था, पांच वक़्त की नमाज़ तो क्या जुमुआ़ पढ़ने से भी मह़रूम रहता । एक दिन किसी अ़ज़ीज़ के घर जाना हुवा, वहां बैठे बैठे अचानक मेरी नज़र अलमारी में रखी एक इस्लामी किताब पर पड़ी, मैं ने वोह किताब उठाई और पढ़ना शुरूअ़ कर दी । किताब बहुत अच्छी थी, इस लिये मेरे दिल में दीनी कुतुब के मुत़ालए़ का शौक़ पैदा हुवा । चुनान्चे, मैं ने अपने दोस्त से मुत़ालए़ के लिये कुछ किताबें मांगी, उस ने मुझे क़ब्रो आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के चन्द रसाइल दिये । जब मैं ने उन रसाइल का मुत़ालआ़ किया तो मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए और इस बात का एह़सास हुवा कि मैं अब तक ग़फ़्लत की ज़िन्दगी गुज़ार रहा था । उसी वक़्त मैं ने सच्चे दिल से गुनाहों भरी

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी से तौबा की, नमाज़ी बन गया । दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में भी ह़ाज़िर होने लगा । चेहरे को दाढ़ी मुबारक और सर को इ़मामा शरीफ़ से सजा लिया और दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया । (काले बिच्छू का ख़ौफ़, स. 28)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत का अन्दाज़े तरबिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरबान जाइये ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मदनी सोच पर कि एक मदनी मुज़ाकरे में बन्दों के हुक़ूक़ के बारे में आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तरबिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "मां-बाप और बच्चों की ह़क़ तलफ़ी न हो, किसी क़िस्म का गुनाह न करना पड़े तो 12 माह का सफ़र ज़रूर कीजिये" । मरह़बा ! मदनी तरबिय्यत का कैसा प्यारा अन्दाज़ है कि आ़शिक़ाने रसूल को 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब भी इरशाद फ़रमाई जा रही है, साथ ही साथ येह भी मदनी ज़ेह्न दिया जा रहा है कि शरीअ़त का दामन हाथ से न छूटे, तन्ज़ीमी काम भी करना है तो उस में भी हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़याल रखना होगा, रिज़ाए इलाही को हर ह़ाल में पेशे नज़र रखना होगा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी मुज़ाकरा कसीर इ़ल्मे दीन सीखने का बेहतरीन व आसान ज़रीआ़ है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हर हफ़्ते कसीर आ़शिक़ाने रसूल इजतिमाई तौ़र पर शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते हैं, अगर हम चाहते हैं कि हमारे भी इ़ल्मे दीन में इज़ाफ़ा हो, हुक़ूक़ुल इ़बाद से मुतअ़ल्लिक़ दीनी मा'लूमात का ला ज़वाल ख़ज़ाना हमारे हाथ भी आ जाए, वोह कौन सा त़रीक़ा है कि जिस के मुत़ाबिक़ हम इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का अन्दाज़ सीख सकें तो आइये ! हाथों हाथ इस निय्यत का इज़्हार करते हैं कि आइन्दा हम भी बा क़ाइ़दगी के साथ, अव्वल ता आख़िर मदनी मुज़ाकरों में अपनी ह़ाज़िरी को यक़ीनी बनाएंगे । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह्मी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दों के हुक़ूक़ में यूं तो तमाम ही लोगों के हुक़ूक़ अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं और सब की अदाएगी भी ज़रूरी है, लेकिन इन में सब से अहम रिश्तेदारों के हुक़ूक़ हैं, जब एक आ़म मुसलमान के साथ हुस्ने सुलूक करने और उस के हुक़ूक़ अदा करने की तरग़ीब है, तो वोह अफ़राद जिन के साथ ख़ून के रिश्ते हों, उन से तो हुस्ने सुलूक करने और उन के हुक़ूक़ अदा करने की अहम्मिय्यत और ज़ियादा बढ़ जाती है । येही वज्ह है कि दीने इस्लाम ने हमें सिलए रेह्मी की तरग़ीब दिलाई है । सिलए रेह्मी का मत़लब येह है कि अपने अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करना । (फ़ीरोज़ुल लुग़ात, स. 916)

ह़दीसे पाक में है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक क़ौम की वज्ह से दुन्या को आबाद रखा है और उन की वज्ह से माल में इज़ाफ़ा करता है और जब से उन्हें पैदा फ़रमाया है, उन की त़रफ़ ना पसन्दीदा नज़र से नहीं देखा । अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ? इरशाद फ़रमाया : उन के अपने रिश्तेदारों के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ने की वज्ह से ।

(المعجم الکبیر، رقم: ۱۲۵۵۶، ۱۲/ ۶۷)

सिलए रेह्मी के सब से ज़ियादा ह़क़दार वालिदैन और बहन भाई होते हैं, इन के बा'द ह़स्बे मरातिब दीगर रिश्तेदार सिलए रेह्मी के मुस्तह़िक़ हैं । रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह्मी करना, उन का ह़क़ है, क़ुरआने पाक और अह़ादीसे मुबारका में इस की बहुत तरग़ीब दिलाई गई है और "सारी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि सिलए रेह्म वाजिब है और क़त़्ए रेह्म ह़राम है ।" (बहारे शरीअ़त, 3 / 558)

मुलाज़िमीन से शफ़्क़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने रिश्तेदारों से सिलए रेह्मी करने के साथ साथ दीगर मुसलमानों के हुक़ूक़ का भी ख़ास ख़याल रखिये, ख़ास त़ौर पर अपने मुलाज़िमीन के हुक़ूक़ की अदाएगी में हरगिज़ कोताही नहीं

www.dawateislami.net

करनी चाहिये, उ़मूमन बा'ज़ लोग छोटी छोटी ग़लतियों पर अपने मुलाज़िमीन को ज़लील करते, गालियां देते और बा'ज़ नादान तो मार पीट पर उतर आते हैं, ऐसे अफ़राद इस ह़ीदीसे पाक से इ़ब्रत ह़ासिल करें।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ख़ादिमों से बुरा सुलूक करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा। (مسندِ احمد، مسند ابی بکر صدیق، ۱/۲۰، حدیث:۱۳، ملخصاً)

मुलाज़िमीन से हमेशा शफ़्क़त से पेश आइये और जितना हो सके उन की ख़त़ाओं को दर गुज़र कीजिये कि जो दूसरों पर रह़म करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस पर रह़म फ़रमाता है, नीज़ उन के हुक़ूक़ का ख़ास ख़याल रखते हुवे ह़ुस्ने सुलूक से पेश आना, उन्हें ह़क़ीर न जानना, तेज़ मिज़ाजी और गाली गलोच से बाज़ रहना, मुक़र्ररा वक़्त पर उन को उज्रत देना, उज्रत में बिला इजाज़ते शरई कमी न करना, बीमारी में उन की इ़यादत करना, मुम्किन हो तो इ़लाज मुआ़लजे में उन की मदद करना वग़ैरा, इन बातों का भी ख़याल रखना, हम पर अख़्लाक़ी त़ौर पर ज़रूरी है।

मजलिसे इ़लाज का त़आ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक है, जिस में ह़ज़ारों अजीर (या'नी मुलाज़िमीन) मुख़्तलिफ़ शो'बाजात के ज़रीए नेकी की दा'वत आ़म करने में मस्रूफ़े अ़मल हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के शो'बे **"मजलिसे त़िब्बी इ़लाज"** के तह़्त कई मक़ामात पर मह़दूद पैमाने पर शिफ़ा ख़ाने क़ाइम हैं, जहां बीमार त़लबा और मदनी अ़मले का मुफ़्त इ़लाज किया जाता है। मजलिसे इ़लाज के तह़्त क़ाइम शिफ़ा ख़ानों में ज़रूरतन मरीज़ों को दाख़िल भी कर लिया जाता है और ह़स्बे ज़रूरत बड़े अस्पतालों के ज़रीए भी इ़लाज की तरकीब बनाई जाती है। इस मजलिस के क़ियाम का मक़्सद अजीर इस्लामी भाइयों के साथ ख़ैर ख़्वाही है। अगर हम में से भी कोई ऐसा है कि जिस के तह़्त मुलाज़िमीन हैं, तो उन से ह़ुस्ने सुलूक से पेश आइये और आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा कीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

शागिर्दों से शफ़्क़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ सेठ को अपने मुलाज़िम से मह़ब्बत व शफ़्क़त से पेश आना चाहिये, इसी त़रह़ असातिज़ा को भी अपने शागिर्दों से मह़ब्बत व शफ़्क़त का बरताव करना चाहिये, बात बात पर झाड़ने और डांटने से दिलों में आ़रज़ी हैबत तो बैठ जाती है, मगर शागिर्द के दिल से उस्ताद की ता'ज़ीम और उस की इ़ज़्ज़त ख़त्म हो जाने का अन्देशा है, इस लिये एक उस्ताद को चाहिये कि अपने त़लबा को अपनी औलाद की त़रह़ समझे, उन की ग़म ख़्वारी करे, बीमार होने पर उन की इ़यादत करे, उन की जाइज़ ज़रूरिय्यात व मसाइल के ह़ल के लिये कोशिश करे, काम्याबी पर उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करे और नाकामी पर उन की ह़ौसला शिकनी करने के बजाए मज़ीद मेह़नत और लगन से पढ़ने की तरग़ीब दिलाए, उन में ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा पैदा करने की कोशिश करे, क़ौल से ज़ियादा अपने अ़मल से उन की मदनी तरबिय्यत करे नीज़ वक़्तन फ़-वक़्तन उन्हें इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल बता कर उन के शौक़ को बढ़ाता रहे। ख़ुद भी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में अपने आप को मस्रूफ़ रखे और अपने त़लबा को भी दौराने त़ालिबे इ़ल्मी मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने का मदनी ज़ेह्न देता रहे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरे में त़लबए किराम को दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने के ह़वाले से क़ीमती मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : ❖ इ़ल्म का एक शो'बा तजरिबा है, इस में ज़ियादा माहिर वोह है जो दौराने दर्से निज़ामी मदनी काम करता रहेगा। ❖ जिस ने दा'वते इस्लामी का मदनी काम करते हुवे दर्से निज़ामी किया, वोह घर में मदनी माह़ोल बनाने में काम्याब हो जाएगा। ❖ एक उस्ताद मजलिस के तै़ शुदा जदवल के मुत़ाबिक़ ख़ुद भी मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनता रहे और अपने त़लबा को भी मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाता रहे, इस अन्दाज़ से अगर अ़मली त़ौर पर मदनी कामों में शिर्कत होती रही तो दा'वते इस्लामी का मदनी काम बड़ी तेज़ी के साथ जानिबे मदीना बढ़ता चला जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

कमज़ोरों और ग़रीबों से शफ़क़त

इसी त़रह़ ग़रीबों, नादारों और मिस्कीनों से भी हर मुसलमान को हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये, उन की मुश्किल में मदद करने के साथ साथ मुम्किन हो तो मुस्तक़िल, उन के अख़राजात भी उठाने चाहियें और हमेशा उन से शफ़क़त व प्यार का बरताव करना चाहिये । मन्क़ूल है कि हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते :

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِیْ مِسْكِيْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْكِيْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *! मुझे मिस्कीन ज़िन्दा रख और मिस्कीनी की ह़ालत में मौत अ़त़ा फ़रमा और बरोज़े क़ियामत मुझे मिस्कीनों के ज़ुमरे में उठा ।*

(سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء ان فقراء المھاجرین... الخ، ۴/۱۵۷، الحدیث: ۲۳۵۹)

छोटे बहन भाइयों से शफ़क़त

इसी त़रह़ बड़े बहन भाइयों को छोटों के हुक़ूक़ अदा करते हुवे, उन पर शफ़क़त करनी चाहिये । वालिदैन की वफ़ात के बा'द छोटे बहन भाइयों की परवरिश करना, उन की अच्छी तरबिय्यत करना, उन की ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी को पूरा करना और हर मुश्किल घड़ी में उन का साथ देना और जितना हो सके उन की ह़ाजत रवाई व दिल दारी करना, वालिदैन की ह़यात में भी उन से शफ़क़त व मह़ब्बत से पेश आना, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी और ह़सद आ़म मुसलमान से ह़राम है, तो उन से ब दरजए औला नाजाइज़ है, ब तक़ाज़ए बशरिय्यत उन से सरज़द होने वाली ख़त़ाओं को मुआ़फ़ करना और हमेशा उन से नर्मी का बरताव करना ।

हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी के फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी से दुन्या व आख़िरत में कसीर फ़वाइद ह़ासिल होते हैं और इस को तर्क करना दुन्या व आख़िरत में बे शुमार नुक़्सानात का सबब बन सकता है । इस की अदाएगी से इन्सान को ज़ेह्नी व क़ल्बी सुकून मिलता और यूं बन्दा बहुत सी बीमारियों से बच जाता है ।

www.dawateislami.net

- ❖ बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी से हर शख़्स को उस का ह़क़ मिलना शुरूअ़ हो जाता है, जिस से मुआ़शरे में अम्न व सुकून आ़म होता और लड़ाई झगड़ों का ख़ातिमा हो जाता है।
- ❖ लोगों के हुक़ूक़ अदा करने वाला शख़्स उन के दरमियान इ़ज़्ज़त, वक़ार और पसन्दीदगी की निगाह से देखा जाता है।
- ❖ हुक़ूक़ की अदाएगी से आपस की मह़ब्बतों को फ़रोग़ मिलता है, जिस से रिश्ते मज़बूत़ होते हैं।
- ❖ अदाएगिये हुक़ूक़ से बन्दों के हुक़ूक़ की पामाली पर मिलने वाले गुनाहों से बचत होती है।
- ❖ इन गुनाहों के सबब होने वाले अ़ज़ाब से भी छुटकारा ह़ासिल हो जाता है।
- ❖ बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी का सब से बड़ा फ़ाइदा येह होता है कि बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल होती है।

गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार — इस से ले फ़ज़्ल से रब्बे ग़फ़्फ़ार
काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है — या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 138)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बन्दों के हुक़ूक़ तर्क करने के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ हम ने बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी से दुन्या व आख़िरत में ह़ासिल होने वाले चन्द फ़वाइद सुने, इसी त़रह़ बन्दों के हुक़ूक़ तर्क करने की वज्ह से जो नुक़्सानात हो सकते हैं, आइये ! इस ह़वाले से भी कुछ सुनते हैं।

- ➢ बन्दों के हुक़ूक़ अदा न करने से बन्दा दूसरों की दिल आज़ारी जैसे कबीरा गुनाह में मुब्तला हो सकता है।
- ➢ येही दिल आज़ारी ह़सद, कीना, बुग़्ज़ और दुश्मनी जैसे कई गुनाहों पर उभार सकती है।

www.dawateislami.net

- इन गुनाहों में पड़ने के सबब ग़ीबतों, चुग़लियों, तोहमतों, बद गुमानियों और कई कबीरा गुनाहों का दरवाज़ा खुलता है। यूं बन्दों के हुक़ूक़ को तर्क करना गोया कई गुनाहों का सबब बन सकता है।
- जिन के हुक़ूक़ त़लफ़ किये, उन्हें राज़ी करने के लिये बरोज़े क़ियामत अपनी नेकियां भी देनी पड़ सकती हैं।
- नेकियां न होने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उठाना पड़ेगा और यूं जन्नत से महरूम होने पर इ़ब्रतनाक अन्जाम से दो चार होना पड़ सकता है।
- दूसरों के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करने वाले शख़्स से लोग नफ़रत करते और बेज़ार रहते हैं।

बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने के त़रीक़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो चीज़ जिस क़दर अहम हो, उस के हुसूल के लिये भी उतनी ही कोशिश की जाती है, अगर मुसलमान, बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी करें, तो इस से दुन्या व आख़िरत संवर सकती है और इस की अदाएगी में कोताही से काम लिया तो दुन्या व आख़िरत दोनों ही बरबाद हो सकती हैं। लिहाज़ा किसी भी ज़ी शुऊ़र शख़्स से इस की अहम्मिय्यत ढकी छुपी नहीं। बन्दों के हुक़ूक़ का ख़याल रखने, बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने की आ़दत किस त़रह़ बनाई जाए ? आइये ! इस के चन्द त़रीक़े भी सुनते हैं :

﴾1﴿...हुक़ूक़ का इ़ल्म ह़ासिल कीजिये !

सब से पहले बन्दों के हुक़ूक़ का इ़ल्म ह़ासिल करना होगा, किसी भी चीज़ की सह़ीह़ मा'लूमात के बिग़ैर उस पर अ़मल पैरा होना तक़रीबन ना मुम्किन होता है, अफ़्सोस ! हमारे मुआ़शरे की अक्सरिय्यत चूंकि बन्दों के हुक़ूक़ से ही ना वाक़िफ़ है, तो उन की अदाएगी से भी कोसों दूर है। बन्दों के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुब **''इह़याउल उ़लूम, जिल्द 2, सफ़ह़ा 626 ता 789''** **''वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़''** अमीरे अहले

www.dawateislami.net

सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला **''ज़ुल्म का अन्जाम''** और मक्तबतुल मदीना का रिसाला, **''तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त 6) हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें''** का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद रहेगा।

﴾2﴿...हमेशा मुस्बत सोचिये !

किसी के बारे में मन्फ़ी सोच को दिलो दिमाग़ में जगह देने और उस के ना पसन्दीदा औसाफ़ याद करने के बजाए मुस्बत सोच क़ाइम कीजिये और उस के अच्छे औसाफ़ को याद रखिये।

मन्क़ूल है कि एक शख़्स अपनी बीवी की शिकायत करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा, दरवाज़े पर पहुंच कर उस ने अमीरुल मोमिनीन की ज़ौजा की बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू सुनी, वोह येह कहते हुवे लौट गया कि अमीरुल मोमिनीन तो खुद इस मस्अले का शिकार हैं, बा'द में अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे बुलवा कर आने (और फिर लौट जाने) की वज्ह पूछी, उस ने मुकम्मल वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बीवी के चन्द हुक़ूक़ के सबब मैं उस से दर गुज़र करता हूं। (1) वोह मुझे जहन्नम से बचाने का ज़रीआ़ है, उस की वज्ह से मेरा दिल ह़राम की ख़्वाहिश से बचा रहता है (2) मेरी घर से ग़ैर मौजूदगी में वोह मेरे माल की ह़िफ़ाज़त करती है (3) मेरे कपड़े धोती है (4) मेरे बच्चों की परवरिश करती है (5) मेरे लिये खाना पकाती है। उस ने कहा येह औसाफ़ तो मेरी बीवी में भी मौजूद हैं, लिहाज़ा अब मैं भी उस से दर गुज़र किया करूंगा।

(تنبیہ الغافلین، باب حق المراۃ علی الزوج، ص ۲۸۰ ملخصاً)

﴾3﴿...एह़सासे ज़िम्मेदारी पैदा कीजिये !

अपने अन्दर एह़सासे ज़िम्मेदारी पैदा कीजिये और बन्दों के हुक़ूक़ को भी अपनी ज़िम्मेदारी समझिये, बन्दों के हुक़ूक़ अदा करना भी हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी ही है। हमारे अस्लाफ़ भी इसे अपनी ज़िम्मेदारी समझते और इसी सोच में कुढ़ते रहते। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा का बयान है कि जब उन्हें मरतबए ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़

www.dawateislami.net

किया गया तो घर आ कर मुसल्ले पर बैठ कर रोने लगे, यहां तक कि दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई, मेरे पूछने पर इरशाद फ़रमाया : मेरी गरदन पर उम्मते सरकार का बोझ डाल दिया गया है, जब मैं भूके, फ़क़ीरों, मरीज़ों, मुसाफ़िरों, बूढ़ों, बच्चों अल ग़रज़ ! तमाम दुन्या के मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के मुतअ़ल्लिक़ सोचता हूं तो डरता हूं कि कहीं इन के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बाज़ पुर्स न फ़रमाए और मुझ से जवाब न बन पड़े, बस इस भारी ज़िम्मेदारी का एह़सास और इसी की फ़िक्र मुझे रुला रही है। (تاریخ الخلفاء، ص۱۸۹)

﴾4﴿...नेकियों पर ह़रीस बन जाइये !

बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी अपनाने का एक त़रीक़ा येह भी है कि मालो दौलत की ह़िर्स को छोड़ कर नेकियों पर ख़ुद को ह़रीस बनाने की कोशिश की जाए, हमें नहीं मा'लूम कि हमारी कौन सी नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दाइमी रिज़ा का सबब बन जाए, इस लिये छोटी से छोटी नेकी भी न छोड़ी जाए। लोगों से अच्छा सुलूक करने के फ़ज़ाइल पढ़े जाएं और सवाब की निय्यत से बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी पर कमर बस्ता रहा जाए। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : लोगों से अच्छा सुलूक करना सदक़ा है।

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب مداراۃ الناس ومن لایومن شرہ، ج۸، رقم ۱۲۶۳۰، ص۳۸)

﴾5﴿...ख़ौफ़े ख़ुदा का जाम पीजिये !

बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी के साथ साथ दीगर अच्छे औसाफ़ को अपनाने और बुरी आ़दतों से पीछा छुड़ाने का एक अहम ज़रीआ़ ख़ौफ़े ख़ुदा भी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन ज़रीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी शख़्स की सआ़दत मन्दी की अ़लामत येह है कि उसे बद बख़्ती का ख़ौफ़ लाह़िक़ रहे, क्यूंकि ख़ौफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और बन्दे के दरमियान लगाम है, जब किसी बन्दे की लगाम टूट जाए तो वोह हलाक होने वालों के साथ हलाकत का शिकार हो जाता है। (احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج۴، ص۱۹۹) लिहाज़ा इस ने'मते उ़ज़्मा के ह़ुसूल की कोशिश की जाए, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से बन्दों के हुक़ूक़ की अदाएगी के साथ साथ दीगर नेक काम भी हमारी ज़िन्दगी का ह़िस्सा बन जाएंगे।

www.dawateislami.net

ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा की शम्अ़ जलाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल अपनाना भी है, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाले नेक लोगों की सोह़बत में बैठना भी इन्सान के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने में मददगार साबित होता है। ऐसी सोह़बत पाने के लिये अपने शहर में हर जुमा'रात को होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत को मा'मूल बनाइये, आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार कीजिये, हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से अपनी आख़िरत बेहतर बनाने की फ़िक्र पैदा होगी और आइन्दा पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़ाए इलाही, ह़ुसूले सवाब और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ वक़्तन फ़-वक़्तन मां-बाप, बहन भाइयों, रिश्तेदारों, दोस्तों, अ़ज़ीज़ व अक़्रिबा, उस्ताद व शागिर्द, सेठ व मुलाज़िम, निगरान व मातह़ूत वग़ैरा से मुआ़फ़ी तलाफ़ी का सिलसिला होता रहना चाहिये, बा'ज़ अवक़ात नफ़्स मुआ़फ़ी मांगने की त़रफ़ आसानी से माइल नहीं होता, बल्कि येह ज़ेह्न होता है कि मैं तो मुआ़फ़ी में पहल नहीं करूंगा, वोह मुझ से मुआ़फ़ी मांगेगा तो मैं मुआ़फ़ कर दूंगा, मैं ख़ुद मुआ़फ़ी नहीं मांगूगा। क़ुरबान जाइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़ज़ीम शख़्सिय्यत पर कि बसा अवक़ात ऐसा भी हुवा है कि मदनी चेनल पर बराहे रास्त (Live) लाखों आ़शिक़ाने रसूल से मुआ़फ़ी मांग रहे होते हैं कि मेरी वज्ह से अगर किसी का बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा भी कोई ह़क़ तलफ़ हुवा हो, तो रिज़ाए इलाही के लिये मुझे मुआ़फ़ कर दीजिये।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! एक दूसरे से मुआ़फ़ी मांगने का कैसा प्यारा अन्दाज़ सिखाया जा रहा है, कैसी मदनी सोच दी जा रही है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इस प्यारी अदा को भी अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने सुना :

- बन्दों के हुक़ूक़ अदा करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा का बाइस है और उन्हें तलफ़ करना, उन की नाराज़ी का सबब है।
- बन्दों के हुक़ूक़ तलफ़ करना जहन्नम का मुस्तह़िक़ बनने के साथ साथ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सख़्त पकड़ में गिरिफ़्तार करवा सकता है।
- बन्दों के हुक़ूक़ अगर दुन्या में अदा न किये तो क़ियामत में अदा करने होंगे, यहां माल से अदा कर सकते हैं, जब कि वहां आ'माल से अदा करने होंगे।
- वोह अफ़राद जो हमारे मातह़्त हों, जैसे हमारे मुलाज़िम, छोटे बहन भाई वग़ैरा, इन के हुक़ूक़ का बिल ख़ुसूस ख़याल रखना चाहिये, क्यूंकि उ़मूमन ऐसे ही लोगों के हुक़ूक़ तलफ़ किये जाते हैं।
- बन्दों के हुक़ूक़ की सह़ीह़ अदाएगी के लिये इस का इ़ल्म सीखना भी बे ह़द ज़रूरी है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکاۃُ الْمَصابِیح، ج۱ ص۵۵ حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नाख़ुन काटने के आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से नाख़ुन काटने के चन्द मदनी फूल सुनते हैं :

(1) जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना मुस्तह़ब है। हां, अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये। (دُرِّمُختار ج۹ص۶۶۸) सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : जो जुमुआ़ के रोज़ नाख़ुन तरश्वाए (काटे) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरश्वाए (काटे) तो रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 225, 226,/ (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۹ص۶۶۸

(2) हाथों के नाख़ुन काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगली (या'नी छोटी उंगली) समेत नाख़ुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये। अब उल्टे हाथ की छुंगली (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये। अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटा जाए। (دُرِّمُختار ج۹ص۶۷۰، اِحیاءُ الْعُلُوم ج ۱ ص ۱۹۳) (3) पाउं के नाख़ुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगली (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये, फिर उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगली समेत नाख़ुन काट लीजिये। (ऐज़न) (4) जनाबत की ह़ालत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाख़ुन काटना मक्रूह है। (आ़लमगीरी, जि. 5, स. 358) (5) दांत से नाख़ुन काटना मक्रूह है और इस से बरस या'नी कोढ़ के मरज़ का अन्देशा है। (ऐज़न) (6) नाख़ुन काटने के बा'द उन को दफ़्न कर दीजिये और अगर उन को फैंक दें तो भी ह़रज नहीं। (101 मदनी फूल, स. 27)

मुझ को ज़ब्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार सुन्नतों की तरबिय्यत के क़ाफ़िले में बार बार

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ **शबे जुमुआ़ का दुरूद :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ **तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ **रह़मत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अहमद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने इस दुआ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र हासिल कर ली । (تاریخ ابن عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵)

दुआ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**

www.dawateislami.net